नाथ
पब्लिकेशन

नवीन संस्करण (2024-25)

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड द्वारा आयोजित

तृतीय श्रेणी

अध्यापक

मुख्य परीक्षा

लेवल - 1 | लेवल - 2

राजस्थान इतिहास एवं कला संस्कृति

(राजस्थानी भाषा सहित)

पवन भंवरिया
(असिस्टेंट प्रोफेसर)

किशोर सिंह चौहान
(विशेषज्ञ - कला एवं संस्कृति)

धर्मेन्द्र सालवी
(वरिष्ठ अध्यापक)

Scanned with ACE Scanner

ाषा प्राकृत और लिपि ब्राह्मी है। ये शिलालेख **ामें भाब्रू शिलालेख विशेष महत्त्वपूर्ण है।** मिले भाब्रू शिलालेख की खोज एक ब्रिटिश **प्टेन बर्ट ने 1837 ई.** में की थी। हालांकि 12 मील दूर है परन्तु भ्रान्तिवश कैप्टेन बर्ट ख लिख दिया (क्योंकि पिछली शताब्दी में ा) और उसे बंगाल की एशियाटिक सोसायटी

। का बहुत महत्त्व है। **इस शिलालेख से ोता है कि मौर्य सम्राट अशोक बौद्ध** इस शिलालेख में न केवल बुद्ध, धर्म और र निष्ठा प्रकट करता है बल्कि बौद्ध भिक्षु- ा बौद्ध मतावलम्बियों के श्रवण, मनन और ्क ग्रन्थों की अनुशंसा भी करता है।

का दूसरा शिलालेख वहाँ भीम डूंगरी की पर उत्कीर्ण है। **इस लघु शिलालेख की ार्लाइल ने 1871-72 में की थी।**

या यह मौर्य सम्राट अशोक का शिलालेख किन यह कोई नया अभिलेख न होकर र **सहसराम** अभिलेखों की प्रतिलिपि मात्र प्रभाव से यह शिलालेख काफी घिस गया (जिसे पढ़ा न जा सके) अवस्था में है।

 गिलूण्ड कस्बे में बनास नदी तट पर दो लोग 'मोडिया मंगरी' कहते हैं) उत्खनन स्कृति से जुड़ी गिलूण्ड सभ्यता प्रकाश में

. **लाल** के निर्देशन में यहाँ उत्खनन किया 2003 ई. के मध्य पूना के **डॉ. वी.एस.** विश्वविद्यालय (अमेरिका) के **प्रो. ग्रेगरी** हाँ उत्खनन किया गया।

ुगीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं, जिसका पूर्व निर्धारित किया गया है।

के मृद्-भाण्ड मिले हैं - सादे, काले, ार काले चित्रित मृद्-भाण्ड।

ोने (हाथी, ऊँट, कुत्ते आदि), पत्थर की त्र एवं हाथी दाँत की चूड़ियों के अवशेष

- आहाड़ व गिलूण्ड दोनों में अनेक समानताएँ हैं परन्तु सबसे बड़ा अन्तर यह है कि आहाड़ में भवन निर्माण कार्य में पक्की ईंटों के प्रयोग का कोई उदाहरण नहीं मिला है जबकि गिलूण्ड में इनका प्रचुर मात्रा में उपयोग किया गया है।
- इसी तरह आहाड़ में निर्मित मिट्टी के बर्तनों को ज्यामितीय अलंकरणों से सज्जित किया गया है परन्तु गिलूण्ड के बर्तनों पर प्राकृतिक अलंकरण भी मिलते हैं।

गणेश्वर की सभ्यता (नीमकाथाना)

- गणेश्वर नीमकाथाना जिले के अंतर्गत कांतली नदी के उद्गम पर ताम्रयुगीन संस्कृति का महत्त्वपूर्ण स्थल है।
- रत्नचन्द्र अग्रवाल के निर्देशन में हुए उत्खनन से यहाँ से 2800 ईसा पूर्व की सभ्यता के अवशेष मिले हैं।
- गणेश्वर से प्रचुर मात्रा में ताम्र आयुध व उपकरण मिले हैं जो इसे ताम्रयुगीन सभ्यताओं में प्राचीनतम सिद्ध करते हैं।
- यहाँ से प्राप्त ताम्र उपकरणों व पात्रों में 99 प्रतिशत ताँबा है, जो इस क्षेत्र में ताम्र की प्रचुर प्राप्ति का सबूत है।
- **यहाँ से काले व नीले रंग से अंलकृत मृद्पात्र मिले हैं। इन्हें कृपषवर्णी मृद्पात्र कहा गया हैं।**
- गणेश्वर से प्राप्त मछली पकड़ने के कांटों से इस बात की सम्भावना लगती है कि उस काल में कांटली नदी में अथाह पानी था।
- **गणेश्वर के उत्खनन से पत्थर से बने मकानों के अवशेष भी मिले हैं जिससे प्रकट होता है कि उस समय यहाँ के निवासियों में एक स्थान पर मकान बनाकर वहाँ बसने की प्रवृत्ति पनपने लगी थी।**
- इस पुरास्थल से छोटे प्याले भी मिले हैं। अनुमान है कि इनका प्रयोग मद्य पात्र के रूप में होता होगा।
- गणेश्वर भारत की ताम्र सभ्यताओं की जननी माना जाता है। यहाँ से ताँबा हड़प्पा व मोहनजोदड़ो को भेजा जाता था। **गणेश्वर सभ्यता को पुरातत्व का पुष्कर भी कहा गया है।**
- पत्थर से बने बाँध व दोहरी पेचदार शिरेवाली पिन भी गणेश्वर से प्राप्त हुए हैं।

बालाथल की सभ्यता (उदयपुर)

- उदयपुर की वल्लभनगर तहसील के बालाथल ग्राम में 1993 ई. में पूना विश्वविद्यालय के **वी.एन. मिश्र** के निर्देशन में उत्खनन के फलस्वरूप एक ताम्र पाषाणिक सभ्यता प्रकाश (आहड़ सभ्यता से संबंधित) में आई। इस सभ्यता की खोज 1962-63 में **वी.एन. मिश्र** ने की थी।
- उत्खनन से प्राप्त मृद्-भांडों, ताँबे के औजारों और मकानों पर हड़प्पा सभ्यता का प्रभाव दिखाई देता है, जिससे हड़प्पावासियों से इनका संपर्क होने का अनुमान लगाया गया है।

Scanned with ACE Scanner

- बालाथल में 1800 ईसा पूर्व के लगभग ताम्र पाषाणिक सभ्यता तथा 600 ईसा पूर्व के लगभग लौहयुगीन सभ्यता आबाद होने का पुरातत्वशास्त्रियों का अनुमान है।
- यहाँ के उत्खनन से लोहे के औजार प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुए हैं, लोहा गलाने की पाँच भट्टियों के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ से हमें पांचवी सदी ईसा पूर्व का हाथ से बुना कपड़े का टुकड़ा भी प्राप्त हुआ, ग्यारह कमरों वाला भवन, कुष्ठ रोगी का 4000 वर्ष पुराना कंकाल व योगी मुद्रा में शवाधान यहाँ से प्राप्त अन्य महत्त्वपूर्ण साक्ष्य हैं।

राजस्थान के प्रमुख पुरातात्विक स्थल एक नजर में

क्र.सं.	संस्कृति काल	प्रमुख स्थल	जीवन शैली
1.	पुरापाषाण काल	डीड़वाना (सबसे प्राचीन स्थल), जायल (नागौर), विराटनगर (कोटपूतली-बहरोड़), भानगढ़ (अलवर), इन्द्रगढ़ (बूंदी), दर (भरतपुर)	यायावरी जीवन, आखेटक, खाद्य संग्राहक
2.	मध्यपाषाण काल	बागौर (भीलवाड़ा), तिलवाड़ा (बालोतरा), विराटनगर (कोटपूतली-बहरोड़)	पशु पालन सीखना, आखेटक एवं खाद्य संग्राहक
3.	नवपाषाण काल	आहड़ (उदयपुर), गिलूण्ड (राजसमंद), कालीबंगा (हनुमानगढ़)	बस्ती में स्थायी जीवन, पहिए का आविष्कार, अग्नि से परिचय
4.	ताम्रपाषाण काल	बागौर (भीलवाड़ा), तिलवाड़ा (बालोतरा), बालाथल (उदयपुर)	कृषि कार्य, खाद्य उत्पादक, मृद भाण्ड कला व ताम्र से परिचय
5.	ताम्रयुगीन	गणेश्वर (नीमकाथाना), वेणेश्वर (डूंगरपुर), नन्दलालपुरा, किराड़ोत, चीथवाड़ी (जयपुर), साबणियां, पूगल (बीकानेर), बूढ़ा पुष्कर (अजमेर), कुराड़ा (डीडवाना-कुचामन), पिण्ड पाड़लिया (चित्तौड़), पलाना (जालौर), कोल माहौली (सवाईमाधोपुर), मलाह (भरतपुर), झाड़ौल (उदयपुर) आदि	स्थाई जीवन
6.	लौहयुगीन	नोह (भरतपुर), विराटनगर, जोधपुरा, सांभर (जयपुर), सुनारी (नीमकाथाना), रैढ़, नगर, नैनवा (बूंदी), भीनमाल (जालौर), नगरी (चित्तौड़गढ़), चक-84, तरखानवाला डेरा (गंगानगर)	स्थाई जीवन

राजस्थान में पुरातात्विक स्थल व उत्खननकर्ता

क्र.सं.	पुरातात्विक स्थल	समय	उत्खननकर्ता
1.	इन्द्रगढ़ व जयपुर	1870 ई.	सी.ए. हैकट
2.	झालावाड़	1908 ई.	सेटनकार
3.	नगरी (चित्तौड़)	1904 ई., 1915-16 ई., 1962 ई.	डॉ. भण्डारकर, सौन्दराजन (केन्द्रीय पुरातात्विक विभाग)
4.	कुराड़ा (परबतसर)	1934 ई.	पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग
5.	विराटनगर (कोटपूतली-बहरोड़)	1936-37 ई., 1962-63 ई.	दयाराम साहनी, नीलरत्न बनर्जी, कैलाश नाथ दीक्षित
6.	रैढ़ (टोंक)	1938-40 ई.	डॉ. केदारनाथ पुरी
7.	कालीबंगा (हनुमानगढ़)	1952 ई., 1961-62 ई.	अमलानंद घोष, बी.बी. लाल, जे.वी. जोशी, बी.के. थापर
8.	रंगमहल (हनुमानगढ़)	1952-54 ई.	डॉ. हन्नारिक (स्वीडिश दल)
9.	आहड़ (उदयपुर)	1953-1954 ई., 1961-62 ई.	अक्षय कीर्ती व्यास, आर.सी. अग्रवाल, वी.एन. मिश्र, एच.डी.
10.	भीनमाल (जालौर)	1953-54 ई.	रत्नचन्द्र अग्रवाल
11.	गिलूण्ड (राजसमन्द)	1957-1958 ई.	बी.बी. लाल

Scanned with ACE Scanner

12.	नोह (भरतपुर)	1963–64 ई.	रत्नचन्द्र अग्रवाल (रूपारेल नदी)
13.	बागौर (भीलवाड़ा)	1967–68 ई.	वी.एन. मिश्र, एल.एस. लेश्निक (कोठारी नदी)
14.	बालाथल (उदयपुर)	1993–2000 ई.	वी.एन. मिश्र, एस. सिंह, आर.के. मोहन्त देव कोठारी एवं दक्कन
15.	ओझियाना (ब्यावर)	1999–2000 ई.	भारतीय सर्वेक्षण विभाग (बी.आर. मीणा के नेतृत्व में)
16.	गणेश्वर (नीमकाथाना)	1977 ई.	रत्नचन्द्र अग्रवाल

ऐतिहासिक घटनाक्रम

◈ **पाषाणयुगीन संस्कृतियां –**

- एक लाख वर्ष (ई.पू.) – प्रारम्भिक पाषाण–काल में बस्तियां बसी
- पचास हजार वर्ष (ई.पू.) – मध्यकालीन पाषाण–काल में बस्तियां बसी
- दस हजार वर्ष (ई.पू.) – नव–पाषाण काल में बस्तियां बसी
- 4480–3285 ई. पूर्व – बागोर संस्कृति : प्रथम स्तर
- 2765–500 ई. पूर्व – बागोर संस्कृति : द्वितीय स्तर
- 500–300 ई. पूर्व – बागोर संस्कृति : तृतीय स्तर

◈ **ताम्रयुगीन संस्कृतियां –**

- 2500–1200 ई. पूर्व – गणेश्वर संस्कृति
- 2500 ई.पू.–200 ई.सन् – जोधपुरा संस्कृति
- 2300–2000 ई. पूर्व – कालीबंगा संस्कृति
- 1800–1200 ई. पूर्व – आहड़ संस्कृति
- 700–300 ई. पूर्व – गिलुण्ड संस्कृति
- 1200–900 ई. पूर्व – नोह संस्कृति

◈ **लोहयुगीन संस्कृतियां –**

- 1200 ई.पूर्व– 200 ई. सन् – सुनारी संस्कृति
- 500 ई.पूर्व – 200 ई. सन् – तिलवाड़ा संस्कृति
- 300 ई.पूर्व – 100 ई. सन् – बैराठ संस्कृति
- 200 ई.पूर्व – 600 ई. सन् – नगरी संस्कृति
- 200 ई.पूर्व – 200 ई. सन् – रेढ़ संस्कृति
- 200 ई.पूर्व – 900 ई. सन् – नलियासर संस्कृति
- 100 ई.पूर्व – 500 ई. सन् – नगर संस्कृति
- 100 ई.पूर्व – 400 ई. सन् – रंगमहल संस्कृति
- 100 ई.पूर्व –400 ई. सन् – भीनमाल संस्कृति

स्त्रोत : डॉ. सुखवीर सिंह गहलोत

❖❖❖❖❖

Scanned with ACE Scanner

42.	दयालदास सिंढायच	• जन्म – कुड़िया, बीकानेर (1798) • रचना – **''बीकानेर के राठौड़ां री ख्यात''**
43.	दयालदास सिघंवी	• मेवाड़ महाराणा राजसिंह का प्रधानमंत्री था। • राजसमंद झील के पास पहाड़ी पर आदिनाथ जैन मंदिर बनवाया था।
44.	मेजर दलपत सिंह	• जन्म – 23 सितम्बर, 1918 (ब्यावर) • हाइफा युद्ध में अद्भुत वीरता का परिचय।
45.	**दामोदर दास राठी** **'राजस्थान के लौह-पुरुष'**	• ब्यावर के उद्योगपति, 1921 में ब्यावर में आर्य समाज की नींव रखी। • निम्न क्रांतिकारियों की **सहायता** की – अर्जुन लाल सेठी, केसरी सिंह बारहठ, गोपाल सिंह खरवा, विजय सिंह पथिक।
46.	दुर्गाप्रसाद चौधरी	• जन्म 18 दिसम्बर 1906 ई., नीमकाथाना, प्रारंभिक शिक्षा – वर्धमान पाठशाला से हुई। • राजस्थान सेवा संघ में सहयोगी • बिजोलिया किसान आंदोलन में योगदान। • सन् 1936 ई. में **''दैनिक नवज्योति''** समाचार-पत्र का प्रकाशन।
47.	**मुंशी देवी प्रसाद**	• जन्म – 18 फरवरी 1847 ई., जयपुर • जोधपुर राज्य के दरबारी कवि। • प्रमुख मुगल ग्रंथों बाबरनामा, हुमायूंनामा, जहांगीरनामा, औरंगजेबनामा क हिंदी भाषा में अनुवाद किया। • **मुहणौत नैणसी ने इनको 'राजपूताने का अबुल-फजल'' कहा था।**
48.	**नानक भील**	• **बूंदी किसान आंदोलन** के सक्रिय नेता। • **डाबी किसान आंदोलन (बूंदी) में झंडा गीत** गाते समय पुलिस की गोलियों से शहीद हुए।
49.	**डॉ. पी.के. सेठी**	• **जयपुर फुट (नकली पैर)** या कृत्रिम पैर के जनक (1969)
50.	**पृथ्वीराज राठौड़** **'डिंगल का हैरोस'**	• पिता – राव कल्याणमल राठौड़, भाई – राय सिंह (बीकानेर) • अकबर का प्रसिद्ध दरबारी • डिंगल एवं पिंगल का प्रसिद्ध कवि। • रचनाएं – **वेलि क्रिसन रुकमनी री,** कल्ला रायमलोत की कुण्डलियां।
51.	**शहीद मेजर पीरू सिंह शेखावत**	• जन्म– 20 मई 1918 रामपुरा बेरी (झुंझुनूं), सैनिक टुकड़ी – राजपूताना रायफल्स • पाकिस्तान के कश्मीर पर आक्रमण (1947) के दौरान वीरता का परिचय। • मरणोपरांत – **'परमवीर चक्र'** (18 जुलाई, 1948) दिया गया।
52.	**बालमुकंद बिस्सा** (1908–1942)	• जन्म– पीलवा (डीडवाना) – 1908 • **राजस्थान के जतिन दास** • सन् 1942 ई. में जोधपुर में उतरदायी शासन की मांग को लेकर **भूख हड़ताल** की इसी कारण सन् 1942 में स्वर्गवास हो गया। • चरखा संघ एवं खद्दर भण्डार की स्थापना। • उस जमाने में इनकी अंत्येष्ठी में एक लाख लोग शामिल हुए।
53.	**बीरबल सिंह**	• **रायसिंह नगर – श्रीगंगानगर** • तिरंगे की आन-बान की खातिर शहीद।

Scanned with ACE Scanner

17. सोजत (शुघदंती) –

- मारवाड़ एवं मेवाड़ के मध्य स्थित।
- ताम्र उपकरण एवं हथियार प्रसिद्ध।
- जोधपुर रियासत अंतर्गत आता था।

18. नाडोल –

- चौहान शासकों की प्राचीन राजधानी रहा।
- नाडोल चौहान शाखा – संस्थापक – लक्ष्मण या राव लाखणसी।
- प्रमुख मंदिर – आशापुरा माता, लक्ष्मीनारायण मंदिर।

19. सांचौर –

- प्राचीन नाम – सत्यपुर
- आबू के परमारों का आधिपत्य रहा।
- नासिरूद्दीन महमूद ने इसका नाम **महमूदाबाद** रखा था।

20. जहाजपुर –

- शाहपुरा जिले में स्थित हैं।
- राजा जनमेजय ने नामों का सर्वनाश करने के लिए यहीं यज्ञ करवाया था।
- सोमनाथ मंदिर स्थित है।
- बारह मंदिरों का समूह स्थित है, जिससे '12 देवला' या 'बारा देवला' कहते है।

21. ओसियां –

- प्राचीनाम – ऊकेश
- प्रतिहारकालीन मंदिर स्थापत्य कला से प्रसिद्ध।
- प्रमुख मंदिर – तीन हरिहर मंदिर, सूर्य मंदिर, महावीर स्वामी जैन मंदिर, सच्चियाय माता मंदिर (ओसवालों की कुलदेवी)

22. डीडवाना –

- प्राचीन नाम – डेंडवाणक
- जुझारों की देवल के लिए प्रसिद्ध।

23. धौलपुर – धवलपुरी

- 8वीं, 9वीं शताब्दी में चौहानों का आधिपत्य था।

24. भरतपुर –

- 'राजस्थान का प्रवेश द्वार'
- प्रसिद्ध लोहागढ़ दुर्ग
- जाट राजवंश के लिए चर्चित।

- 1942 ई. में भारत छोड़ो आन्दोलन के समय तेजावत पुनः गिरफ्तार कर लिये गये।
- 5 दिसम्बर, 1963 ई. को उनका देहान्त हो गया।
- **भीलों ने तेजावत के नेतृत्व में 'हाकिम और हुक्म नहीं' का नारा दिया था।**

मीणा आंदोलन (सन् 1924-1952)

- जयपुर अलवर क्षेत्र में मीणाओं की संख्या अधिक थी। 1924 ई. में भारत सरकार ने 'क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट' तथा जयपुर राज्य जरायम पेशा कानून-1930 (दादरी अधिनियम) लागू किया।
- इन कानूनों के तहत 25 वर्ष से अधिक आयु के सभी मीणा स्त्री-पुरुषों को रोजाना थाने पर हाजरी देने के लिए पाबन्द किया गया।
- **अतः छोटूराम, लक्ष्मीनारायण झरवाल, महादेवराम, जवाहरराम आदि मीणा नेताओं ने 'मीणा जाति सुधार कमेटी' का गठन किया। 1933 ई. में 'मीणा क्षेत्रीय सभा' की स्थापना हुई।**
- इस सभा ने जयपुर राज्य से जरायम पेशा कानून समाप्त करने की मांग की। अप्रैल, 1944 में जैन मुनि मगनसागरजी के नेतृत्व में नीमकाथाना क्षेत्र में एक सम्मेलन हुआ और 'जयपुर राज्य मीणा सुधार समिति' का गठन हुआ।
- मगन सागरजी ने 'मीन पुराण' की रचना भी की थी।
- मीणा सुधार समिति के अध्यक्ष बंशीधर शर्मा, मंत्री राजेन्द्र कुमार व संयुक्त मंत्री लक्ष्मीनारायण झरवाल बनाये गये।
- 1945 ई. में श्रीमाधोपुर (नीमकाथाना) में तथा 1946 ई. में बागावास (जयपुर ग्रामीण) में विशाल मीणा सम्मेलन हुए।
- ठक्कर बप्पा ने भी मीणाओं की दशा में सुधार हेतु जयपुर राज्य को पत्र लिखा था।
- 1952 में हीरालाल शास्त्री व टीकाराम पालीवाल ने मीणाओं के विरूद्ध सभी प्रतिबंध वापस ले लिये।
- अंततः काफी प्रयत्नों के बाद 4 मई, 1946 को जयपुर राज्य ने जरायम पेशा कानून को समाप्त करने की घोषणा की।

❖❖❖❖❖

Scanned with ACE Scanner

9 राजस्थान की प्रमुख हवेलियां

जैसलमेर की हवेलियाँ –

हवेलियों का नगर, **स्वर्णनगरी व म्यूजियम सिटी उपनाम** से प्रसिद्ध जैसलमेर को **''रेगिस्तान का गुलाब''** भी कहा जाता हैं, क्योंकि यहाँ सुन्दर हवेलियाँ हैं, जिनमें प्रमुख हैं –

पटवों की हवेली –

पाँच मंजिला इस हवेली का निर्माण 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध में जैसलमेर के एक व्यवसायी **गुमानचन्द बाफना (पटुवा)** के पाँच पुत्रों ने करवाया।

नोट : यह जैसलमेर की सबसे बड़ी हवेली है।

सालिम सिंह की हवेली – जैसलमेर के **प्रधानमंत्री/दीवान सालिमसिंह** मेहता द्वारा 18वीं सदी में निर्मित यह **नौ-मंजिला** हवेली पत्थर की नक्काशी व बारीक जालियों के लिए प्रसिद्ध हैं।

इस हवेली के सात खण्ड पत्थर के तथा आठवां एवं नवां खण्ड लकड़ी से निर्मित थे जिन्हें क्रमशः **रंगमहल एवं शीशमहल** कहा जाता था। वर्तमान में इसे हटा लिया गया है।

इसकी छठवीं मंजिल को ''जहाज महल'' और सातवीं मंजिल को ''मोती महल'' कहते हैं।

नथमल की हवेली – जैसलमेर के राजा वैरीशाल सिंह भाटी के के प्रधानमंत्री (दीवान) नथमल ने 1881 ई. से 1885 ई. के मध्य 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में इस हवेली का निर्माण करवाया।

इस हवेली के शिल्पकार **हाथी व लालू नामक दो सगे भाई** थे।

शेखावाटी की हवेलियाँ –

झुंझुनूं की हवेलियाँ –

नवलगढ़ की हवेलियाँ – **''शेखावाटी की स्वर्णनगरी''** के नाम से प्रसिद्ध नवलगढ़ की हवेलियों की प्रमुख विशेषता हैं- ऊँचा खुर्रा, ऊँचे दरवाजे, विशाल चौक एवं फ्रेस्को पेंटिंग आदि। यहाँ स्थित हवेलियों में **पौद्दारों की हवेली**, आठ हवेली काम्पलेक्स, **भगतों की हवेली (नवलगढ़ की हवेलियों में सबसे विशाल हवेली)**, चौखानी परिवार की हवेली, **भगोरिया की हवेली, जालान की हवेली, ईसरदास मोदी की हवेली**, टीबड़ेवाला की हवेली, लालधरजी धरकाजी की हवेली, **रूपनिवास हवेली** इत्यादि। **ईसरदास मोदी की हवेली (नवलगढ़) शताधिक खिड़कियों के लिये प्रसिद्ध हैं।**

- **बिसाऊ (झुंझुनूं) की हवेलियाँ** – यहाँ स्थित हवेलियों में **नाथूराम पोद्दार की हवेली**, सेठ हीराराम बनारसी लाल की हवेली, **सेठ जयदयाल केडिया की हवेली, सीताराम सिगतिया की हवेली**, प्रमुख हैं।
- **मण्डावा (झुंझुनूं) की हवेलियाँ** – यहां लढ़ियों एवं गोयनका की हवेलियां प्रसिद्ध है। यहाँ स्थित हवेलियों में विश्वनाथ गोयनका की हवेली, रामदेव चौखाणी, **सागरमल लढ़िया तथा रामनाथ गोयनका की हवेलियाँ** प्रमुख हैं। मण्डावा में स्वर्णिम बालू रेत के स्तूप दर्शनीय हैं।
- **अन्य हवेलियाँ – सोने चाँदी की हवेली (महनसर, झुंझुनूं)**, तोलाराम जी का कमरा (महनसर), बीरला/बीड़ला की हवेली (पिलानी, झुंझुनूं), **सेठ लालचंद गोयनका हवेली (डूंडलोद, झुंझुनूं), सेठ राधाकृष्ण एवं केसरदेव कानोड़िया की हवेलियाँ (मुकुन्दगढ़, झुंझुनूं), बागड़ियों की हवेली**, डालमिया की हवेलियाँ **(चिड़ावा, झुंझुनूं)**, मोदियों की हवेली व हेमराज कूलवाल की हवेली (झुंझुनूं)।

B. चूरू की हवेलियाँ –

- यहाँ स्थित हवेलियों में **मालजी का कमरा**, कोठारी हवेली, **छः मंजिली सुराणा हवेली (जिसमें 1100 दरवाजे एवं खिड़कियाँ हैं)** रामविलास गोयनका की हवेली, मंत्रियों की हवेली प्रमुख हैं। (चूरू में **सुराणों का हवामहल** प्रमुख हैं)। **दानचंद चौपड़ा की हवेली (सूजानगढ़, चूरू)**, खेमका व पारखों की हवेलियाँ, **कन्हैयालाल बागला की हवेली (चूरू)** इत्यादि।

C. सीकर की हवेलियाँ –

- **रामगढ़** में पौद्दारों की हवेली, बैजनाथ व. ताराचंद रुइया की हवेली, खेमका तथा गोयनका सेठों की हवेलियाँ प्रमुख हैं। लक्ष्मणगढ़ में बिनाणियों की हवेली, नई हवेली, राठी हवेली, रोनेड़ी वालों के चौक की हवेली प्रमुख हैं। **गौरीलाल बियाणी की हवेली (सीकर)**। नन्दलाल देवड़ा एवं कन्हैयालाल गोयनका और सिंघानिया हवेली (फतेहपुर सीकर)। **महावीर प्रसाद गोयनका हवेली फतेहपुर (सीकर) (इसमें कृष्ण की आठ गोपीयां एक हाथी के रूप में चित्रीत हैं)**
- **नीमकाथाना** – **श्रीमाधोपुर में पंसारी की हवेली** स्थित हैं।
- **लक्ष्मणगढ़ (सीकर) की हवेलियाँ** – मुल्तान चंद केडिया की हवेली, शिवनारायण मिर्जामल कायला की हवेली, जवाहरमल पंसारी की हवेली, सांवत चौखाणी की हवेली, बालमुकुन्द बंशीधर राठी की हवेली, केसरदेव सर्राफ की हवेली, तोलाराम परशुराम पुरिया की

Scanned with ACE Scanner

जोधपुर संभाग

ब्राह्मण देवता की छतरी मण्डोर, राजा अजीत सिंह की छतरी, राठौड़ राजाओं के देवल (मण्डोर), मालदेव की छतरी, पालीवालों की छतरियां (जैसलमेर)

नोट : राजा गोपाल सिंह यादव की छतरी करोली, मामा भांजा की मजार, पल्लू (हनुमानगढ़), मामा भांजा का मंदिर, अटरू (बारां)

श्मशान घाट

वाड़, सिसोदिया राजवंश - आहड़ की छतरियां, (2) राठौड़, बीकानेर - देवी कुण्ड की छतरियां (राव कल्याणमल की छतरी सबसे पुरानी). (3) राठौड़, जोधपुर - मण्डौर की छतरियां, (4) भाटी, जैसलमेर - बड़ा बाग की छतरियां, (5) हाड़ा चौहान, कोटा - क्षार बाग की छतरियां, ाड़ा चौहान, बूंदी - केसर बाग की छतरियां (7) कच्छवाह जयपुर - गैटोर की छतरियां (सवाई जयसिंह की छतरी)

खंभो की संख्या	छतरी का नाम (विवरण)	स्थान
1	एक खंभे की छतरी (छतरी नुमा)	सवाईमाधोपुर
4	सवाई ईश्वरी सिंह की छतरी	सीटी पैलेस, जयपुर
4	कल्लाजी राठौड़ की छतरी	चित्तौड़गढ़ दुर्ग
4	पत्ताजी जगावत की छतरी	चित्तौड़गढ़ दुर्ग
4	श्रृंगार कँवरी की छतरी	चित्तौड़गढ़ दुर्ग
4	संत रैदास की छतरी	चित्तौड़गढ़ दुर्ग
4 एवं 6	गोराधाय की छतरी	जोधपुर
6	जयमल मेड़तिया की छतरी	चित्तौड़गढ़ दुर्ग
6	बनजारे की छतरी	लालसोट, दौसा
8	सूरजमल शेखावत की छतरी	तुंगा, जयपुर ~~ग्रामीण~~
8	मिश्रजी की छतरी	अलवर
8	थानेदार नाथूसिंह की छतरी	शाहबाद, बारां
8	महाराणा सांगा की छतरी	माण्डलगढ़, भीलवाड़ा
8	शक्ति सिंह (महाराणा प्रताप का भाई) की छतरी	भैसरोड़गढ़, चित्तौड़गढ़
8	महाराणा प्रताप की छतरी (केजड़ बांध, बाण्डोली)	चावण्ड, सलूम्बर
10	मामा-भान्जा की छतरी (धन्ना गहलोत - भीमा चौहान)	मेहरानगढ़, जोधपुर
12	उड़ना राजकुमार पृथ्वीराज सिसोदिया की छतरी	कुंभलगढ़ दुर्ग, राजसमंद
12	कान्हा नरूका की छतरी	निवाई, टोंक
16	सूरज छतरी (सूर्य भगवान को समर्पित)	बूंदी
16	अमर सिंह राठौड़ की छतरी	नागौर
18	राजसिंह चाम्पावत (प्रधानमंत्री की छतरी)	जोधपुर
20	अक्खैराज सिंघवी की छतरी	जोधपुर
32	न्याय की छतरी/जैत्र सिंह की छतरी	रणथम्भौर दुर्ग, स.माधोपुर
32	रावत जोधसिंह की छतरी	बदनोर, ब्यावर
32	जगन्नाथ कच्छवाह की छतरी	माण्डल, भीलवाड़ा
32	महाराणी सूर्य कंवरी की छतरी	जोधपुर
80	मूसी महाराणी की छतरी	अलवर
84	धायभाई देवा की छतरी	बूंदी

नोट : 84 खंभों का मंदिर - (1) नाथ मंदिर/महामंदिर, जोधपुर (2) कामां (डीग)

1444 खंभों का मंदिर - रणकपुर जैन मंदिर, रणकपुर, पाली, विशेष : फतेहगंज गुम्बद - अलवर

Scanned with ACE Scanner

◈ **पुष्कर पशु मेला** - प्रतिवर्ष **कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से मार्गशीर्ष कृष्णा द्वितीया** तक (**विशेषतः कार्तिक पूर्णिमा को**) तक **पुष्कर (अजमेर)** में पुष्कर पशु मेला भरता है। यह **अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति** प्राप्त मेला है, जिसे **रंगीन मेला, मेरवाड़ा का कुंभ, दीपदान हेतु प्रसिद्ध मेला** भी कहा जाता है। यह सर्वाधिक **ऊँट बिक्री वाला मेला** है तथा इस मेले में **सर्वाधिक विदेशी पर्यटक** आते हैं।

◈ **चन्द्रभागा पशु मेला** - प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ल एकादशी से मार्गशीर्ष कृष्ण पंचमी (**विशेषतः कार्तिक पूर्णिमा को**) **झालरापाटन (झालावाड़)** में चन्द्रभागा पशु मेला भरता है।

इसे **हाड़ौती का सुरंगा मेला** कहते है।

◈ **बाबा रामदेव पशु मेला** - प्रतिवर्ष माघ शुक्ल प्रतिपदा से माघ पूर्णिमा तक (फरवरी) **मानासर (नागौर)** में लोकदेवता रामदेव जी की याद में बाबा रामदेव पशु मेला भरता है। इसे **नागौर मेला** भी कहते है।

इसमें पशुओं की खरीद फरोख्त के साथ-साथ **लाल मिर्च बाजार** भी प्रसिद्ध है।

◈ **महाशिवरात्रि पशु मेला** - प्रतिवर्ष माघ पूर्णिमा से फाल्गुन कृष्णा सप्तमी तक को **करौली** में शिवरात्रि पशु मेला भरता है।

◈ **मल्लीनाथ पशु मेला** - प्रतिवर्ष **चैत्र कृष्ण एकादशी से चैत्र शुक्ल एकादशी** तक **तिलवाड़ा (बालोतरा)** में **लूनी नदी** के किनारे लोक देवता मल्लीनाथ जी की याद में मल्लीनाथ जी का पशु मेला भरता है। यह राजस्थान का सबसे पुराना पशु मेला है। इसकी **शुरूआत मोटाराजा उदयसिंह** के समय हुई।

◈ **गधों का मेला** - प्रतिवर्ष **अश्विन शुक्ल सप्तमी से अश्विन शुक्ल एकादशी** तक **भावगढ़ बंध्या गांव लूणियावास, जयपुर ग्रामीण** में भरता है। यह मेला **खलकाणी माता** को समर्पित है। इस मेले की शुरूआत कच्छवाहों ने चन्द्रा मीणा पर विजय की खुशी में की थी।

विशेष : राजस्थान में दूसरा गधों का मेला ब्राह्मणी माता सोरसेन बारां में माघ-शुक्ल-सप्तमी को भरता है।

◈ **सारणेश्वर पशु मेला** - यह मेला प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी से दशमी (विशेषतः देवजूलनी एकादशी) तक **सिरोही** में भरता है।

यह मेला रेबारी जाति का विशेष मेला है।

◈ **सीता बाड़ी पशु मेला** - प्रतिवर्ष ज्येष्ठ अमावस्या को **सीताबाड़ी (बाराँ)** में सीताबाड़ी पशु मेला भरता है।

RTDC द्वारा आयोजित महोत्सव

महोत्सव का नाम	**स्थान**	**महा और विशेष विवरण**
ऊंट	बीकानेर	जनवरी
पतंग	जयपुर एवं जैसलमेर	जनवरी
नागौर	नागौर	जनवरी
पिंकसिटी	जयपुर	जनवरी
नौकायन महोत्सव	कुंभलगढ़	जनवरी (लाखेला तालाब में)
मरू (माण्ड) महोत्सव	जैसलमेर	फरवरी
बेणेश्वर	डूंगरपुर	फरवरी
ब्रज (होली)	भरतपुर	फरवरी-मार्च
फोर्ट	चित्तौड़गढ़ दुर्ग	फरवरी-मार्च
एडवेंचर स्पोटर्स	कोटा	फरवरी-मार्च (चम्बल नदी में पाल नौकायन प्रतियोगिता)
शेखावाटी	सीकर, चुरू, झुंझुनूं	फरवरी-मार्च
अलवर	अलवर	फरवरी
वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टीवल	उदयपुर	फरवरी (फतेहसागर, पिछोला के किनारे)
जयपुर लिटरेचर फेस्टीवल	जयपुर	मार्च

Scanned with ACE Scanner

हाथी	जयपुर	मार्च
धुलेण्डी	जयपुर	मार्च
गणगौर	जयपुर	मार्च
मेवाड़	उदयपुर	मार्च-अप्रैल
राजस्थान फेस्टीवल	जयपुर	मार्च
बैलून	बाड़मेर	अप्रैल
श्री महावीर जी	करौली	अप्रैल
ग्रीष्म	माण्ट आबू, सिरोही	मई
थार	बाड़मेर	जून
मैंगो	बांसवाड़ा	जून
तीज	जयपुर	अगस्त
कजली तीज	बून्दी	अगस्त
आभानेरी	दौसा	सितम्बर
मारवाड़	ओसियाँ, जोधपुर ग्रामीण	अक्टूबर
मीरा	चित्तौड़गढ़	अक्टूबर
राजस्थान कबीर यात्रा	जयपुर	अक्टूबर
मोमासर	मोमासर, बीकानेर	अक्टूबर
मत्स्य	अलवर	नवम्बर
पुष्कर	पुष्कर-अजमेर	नवम्बर
चन्द्रभागा	झालारापाटन, झालावाड़	नव-दिसम्बर
कोलायत	कोलायत, बीकानेर	नवम्बर
दशहरा	कोटा	नवम्बर
बून्दी	बून्दी	नवम्बर
वागड़	डूंगरपुर	नवम्बर
बर्ड फेस्टीवल	उदयपुर	दिसम्बर-जनवरी
शरद	माउण्ट आबू, सिरोही	दिसम्बर-जनवरी
रणकपुर जवाई बांध महोत्सव	रणकपुर-पाली	दिसम्बर
कुंभलगढ़	कुंभलगढ़ दुर्ग	दिसम्बर-जनवरी
शिल्पग्राम	उदयपुर (हवाला गांव)	दिसम्बर
आदि महोत्सव	कोटड़ा (उदयपुर)	दिसम्बर (आदिवासियों की संस्कृति को पहचान दिलाना)
विशेष महोत्सव -		
1. डीग	डीग (भरतपुर)	जन्माष्ठमी
2. हिंदौला	रंगजी का मंदिर, पुष्कर	छोटी तीज से बड़ी तीज तक
3. जौहर मेला	चित्तौड़गढ़	चैत्र कृष्ण एकादशी

❖❖❖❖❖

Scanned with ACE Scanner

डूंगरपुर के **महारावल शिवसिंह** ने गवरी बाई के प्रति श्रद्धास्वरूप **बालमुकुन्द मन्दिर** का निर्माण करवाया था।

निर्गुण भक्ति धारा

रामस्नेही संप्रदाय

शाहपुरा शाखा, शाहपुरा

रामस्नेही संप्रदाय संस्थापक रामचरण जी का जन्म 1719 ई. में माघ शुक्ल चतुर्दशी को सोडा ग्राम जयपुर (वर्तमान में मालपुरा-टोंक) में एक विजयवर्गीय वैश्य परिवार में हुआ।

इनके बचपन का नाम रामकिशन था। इनके पिता का नाम 'बख्तराम' माता का नाम 'देऊजी' पत्नी का नाम 'गुलाब कँवर' था।

विक्रम संवत् 1760 ई. में रामचरण जी ने रामस्नेही संप्रदाय की स्थापना की इस संप्रदाय की मूल गद्दी शाहपुरा में स्थित है।

इनके द्वारा रचित ब्रजभाषा में गीतों का संग्रह 'अणभैवाणी'/ अणर्भवाणी (ब्रजभाषा) कहलाता है। इनके गुरू कृपाराम थे।

स्वामी रामचरण ने सत्संग पर भी बल दिया है। **इस सम्प्रदाय के प्रार्थना स्थल रामद्वारा कहलाते है।**

इनके **शिष्य दाढ़ी मूंछ और सिर के बाल नहीं रखते, गुलाबी रंग** की **पोशाक धारण** करते हैं तथा **मूर्ति पूजा** नहीं करते हैं।

रैण शाखा-मेड़ता (दरियापंथ)

दरियावजी का जन्म जैतारण (ब्यावर) नामक नगर में वि.सं. 1733 (1676 ई.) को **जन्माष्टमी** के दिन को हुआ था।

इनके पिता का नाम **मानसा** और माता का नाम **गीगा** था, जो जाति से **पठान धुनियाँ मुसलमान** थे।

सिंहथल शाखा-बीकानेर

- सिंहथल शाखा के **प्रवर्तक हरिरामदासजी** संत रामचरण के समकालीन थे इनका जन्म **बीकानेर में सिंहथल नामक गाँव** के **भागचंद जोशी** व **रामी** के घर हुआ था।
- संत **हरिरामदास जी गृहस्थ** थे इनकी पत्नी का **नाम चंपा** और पुत्र का नाम **बिहारीदास** था। संत हरिरामदास ने **संत जेमलदासजी से रामस्नेही पंथ की दीक्षा** ली। **संत हरिरामदास जी की प्रमुख कृति 'निसानी' है।**

खेड़ापा शाखा-जोधपुर ग्रामीण

- खेड़ापा शाखा के **प्रवर्तक संत रामदास** का जन्म वि.सं. 1783 (1726 ई.) को जोधपुर जिले के बीकमकोर नामक गाँव में मेघवाल परिवार में हुआ था।
- इनके पिता का नाम शादूलजी और माता का नाम अणभी था।

विश्नोई संप्रदाय, जाम्भोजी (पीपासर, नागौर)

- संत जांभोजी (मूल नाम **'धनराज'**) का जन्म **1451 ई.** (विक्रम संवत् 1508) **'पीपासर'** (नागौर) में **भाद्रपद कृष्ण अष्टमी** (जन्माष्टमी) के दिन पंवार वंशीय राजपूत परिवार में हुआ।
- जाम्भो के समकालीन – **राव लूणकरण (बीकानेर), सिंकदर लोदी, जसनाथजी**
- इन्होंने पर्यावरण चेतना जैसी शब्दावली का महत्त्व बहुत पहले जान लिया था।
- विश्व में **पर्यावरण आन्दोलन के प्रथम प्रणेता, विष्णु का अवतार थे।**
- इनकी माता का नाम **'हंसा देवी'** तथा पिता का नाम **'लोहट'** था।
- इनके गुरू का नाम **गोरखनाथ** था। **जांभोजी ने विष्णु की निर्गुण निराकार ब्रह्मा के रूप उपासना पर बल दिया।**
- विश्नोई संप्रदाय में **29 प्रकार की शिक्षाएँ (नियम)** होती हैं इन शिक्षाओं को पालन करने वाला व्यक्ति **विश्नोई (20+9)** कहलाता है। हरे वृक्षों की रक्षा एवं वन्य जीवों की रक्षा पर जोर दिया।
- **जाम्भोजी ने नीले वस्त्र पहनने की मनाई की थी।**
- **जाम्भोजी की मृत्यु 1536 ई. में लालासर (बीकानेर) में हुई और मुकाम तालवा (नोखा, बीकानेर) में इनकी समाधि है।**
- इनका प्रमुख कार्य स्थल **समराथल (बीकानेर)** रहा। समराथल (समराथल का यह ऊँचा टीला विश्नोई पंथ में **'धोक धोरे'** के नाम से प्रसिद्ध है) में ही रहते हुए इन्होंने 1485 ई. में ही कार्तिक **कृष्णा अष्टमी** को कलश स्थापना कर अपने मत **(विश्नोई संप्रदाय) का प्रवर्तन** किया। यहीं पर शिष्यों को 29 नियम बताये।
- **सांथरी** – उपदेश स्थल, माटो-खेजड़ी का वृक्ष
- वर्ष में दो बार **फाल्गुन और आश्विन की अमावस्या** को यहां मेला लगता हैं। जांभोजी के मुख से उच्चारित वाणी **'सबदवाणी'** के नाम से विख्यात है।
- पहला पाहल (अभिमंत्रित जल) दीक्षित व्यक्ति – **पुल्होजी**
- राजस्थान में विश्नोई सम्प्रदाय की आस्था का प्रमुख केन्द्र जिसे दूसरा **मुकाम तालवा** कहा जाता है – **लोहावट (फलोदी)**
- डॉ. पेमाराम – कम बोलने की प्रवृत्ति के कारण जाम्भौ जी को **गेहला-गूंगा** संत कहा।
- इनके शिष्य **वील्हो** जी ने **"कथा जैसलमेर की"** रचना की।
- इस संप्रदाय की प्रमुख पीठ-मुकाम-तालवा (नोखा, बीकानेर) में है। पर्यावरण सुरक्षा हेतु प्राणों तक का बलिदान कर देने के लिए यह संप्रदाय प्रसिद्ध है। **जाम्भा (फलौदी), रामड़ावास (पीपाड़-जोधपुर ग्रामीण), लालासर, जागंलू (बीकानेर) एवं लोदीपुर (उत्तरप्रदेश) इस संप्रदाय के अन्य तीर्थ स्थल हैं।**

जसनाथी संप्रदाय, जसनाथजी (कतरियासर, बीकानेर)

- जांभोजी के साथ मारवाड़ क्षेत्र में जसनाथजी भी उस समय के प्रमुख संत थे जिनका जन्म वि.सं. 1539 **(1482 ई.) कार्तिक शुक्ला एकादशी** के दिन **कतरियासर (बीकानेर)** नामक गाँव में हुआ था। यह हमीरजी नामक जाट और उनकी पत्नी रूपादे के पौष्य पुत्र थे।

Scanned with ACE Scanner

ब्रह्म
ताया।
धुवन'
हुए।
ा था।
ा)
तृतीया
ा माता
रणजीत
ह्म की
वशेषता

राजस्थान के प्रमुख सम्प्रदाय एवं उनकी प्रमुख गद्दी

प्रमुख सम्प्रदाय	प्रमुख गद्दी
जसनाथी सम्प्रदाय	कतरियासर (बीकानेर)
निम्बार्क सम्प्रदाय	सलेमाबाद (अजमेर)
रामानन्दी सम्प्रदाय	गलता जी (जयपुर)
रसिक सम्प्रदाय	रैवासा (सीकर)
विश्नोई सम्प्रदाय	मुकाम तालवा (नोखा, बीकानेर)
दादू पंथ (जयपुर)	नारायणा (दूदू)
निरंजनी सम्प्रदाय	गाढ़ा (डीडवाना कुचामन)
लालदासी सम्प्रदाय	शेरपुर एवं धोलीधूव
चरण दासी सम्प्रदाय	दिल्ली
रामस्नेही सम्प्रदाय	शाहपुरा
नाथ सम्प्रदाय	जोधपुर
वल्लभ सम्प्रदाय	नाथद्वारा (राजसंमद)
चिश्ती सम्प्रदाय	अजमेर
गूदड सम्प्रदाय	दाँतडा (भीलवाड़ा)
अलखिया सम्प्रदाय	बीकानेर
गौडीय (ब्रह्म)सम्प्रदाय	गोविंद देव जी (जयपुर)
नवल सम्प्रदाय	जोधपुर में

Scanned with ACE Scanner

19 राजस्थान के प्रमुख लोक नृत्य

प्रसिद्ध लोक नृत्य

...स्थान का राज्य नृत्य) -

...राजस्थान के लोक नृत्यों का सिरमौर है। **घूमर नृत्य 'लोकनृत्यों ...आत्मा' कहलाता है।** मांगलिक अवसरों पर किया जाने वाला यह ...महिलाओं द्वारा किया जाता है।

...के अवसर पर इस नृत्य का विशेष आयोजन किया जाता है।

...त्य - राजपूत व गरासिया महिलाओं द्वारा।

...रजवाड़ी नृत्य या सामन्ती नृत्य भी कहते है।

...र नृत्य - बालिका द्वारा किया जान वाला घूमर।

...बार-बार घूमने के साथ **हाथों का लचकदार** संचालन प्रभावकारी ...है। स्त्रियाँ कहरवे के बजने पर नृत्य करती है। घूमर के साथ ...मात्रा में **कहरवे की विशेष चाल होती है,** जिसे **सवाई** कहते हैं।

...के घेरे को '**घुम्म**' कहते हैं। लंहगे का घेर जो वृत्ताकार रूप में ...है वही घूमर का प्रमुख प्रेरणा स्रोत है।

...घूमर नृत्य को देवी सरस्वती की पूजा आराधना के तौर पर ...प्रथम भील जनजाति द्वारा प्रारंभ किया गया था।

...नृत्य के साथ प्रयुक्त वाद्य यंत्र - ढोल, नगाड़ा, शहनाई आदि

...इस नृत्य में घुंघरू का प्रयोग नहीं किया जाता है।

...घूमर डांस अकेडमी, 1986 ई., किशनगढ़-अजमेर
संस्थापक - राजकुमारी गोर्वधन कुमारी जी
उद्देश्य : चरी व घूमर नृत्य को संरक्षण देना।
वर्तमान में मुख्यालय मुम्बई में है।

...त्य, शेखावाटी

...शेखावटी का सबसे प्रसिद्ध लोक नृत्य जो डांडा रोपने (प्रहलाद ...स्थापना) से लेकर होलिका दहन तक चलता है।

...पुरूष महिलाओं की पोशाक धारण करके इसमें भाग लेते ...जिन्हें गणगौर व मेहरी कहा जाता है। इसमें ढ़ोल, डफ, चंग, ...वाद्य भी बजाया जाता है।

...नृत्य में पुरुष डण्डों से नृत्य करते हुए विभिन्न प्रकार के रूप धारण ...करते हुए स्वांग रचते हैं। जैसे : साधु, शिकारी, सेठ-सेठाणी, दूल्हा-...दुल्हन, पठान, पादरी, बाजीगर, शिव-पार्वती, राम-कृष्ण, डाकी-...सरदार आदि।

ढप नृत्य - शेखावाटी

- बसन्त पंचमी के अवसर पर किया जाने वाला पुरुष प्रधान नृत्य।

जिंदाद नृत्य - शेखावाटी

- शेखावाटी क्षेत्र में स्त्री-पुरुषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य। इसमें मुख्य वाद्य यंत्र ढोलकी होता है।

लहूर नृत्य - शेखावाटी

- लहूर का शाब्दिक अर्थ मीठी खुजली होता है। इस नृत्य में अभिनय करते हुए नृत्य किया जाता है। अतः इसे **अभिनय नृत्य या मीठी खुजली नृत्य** अश्लील नृत्य/फूहड़ नृत्य भी कहते है।

शेखावाटी का चंग नृत्य -

- चंग नृत्य शेखावाटी क्षेत्र में होली के दिनों में पुरुषों द्वारा किया जाता है।

डांडिया नृत्य - मारवाड़

- **मारवाड़** क्षेत्र का पुरूषों का लोकप्रिय नृत्य डांडिया नृत्य शहनाई एवं नगाड़े, ढोल पर करते है। **डांडिया मूलतः गुजरात का लोक नृत्य है।**

घुड़ला नृत्य, जोधपुर -

- **यह जोधपुर क्षेत्र का प्रसिद्ध नृत्य है।**
- शीतलाष्टमी से गणगौर तक आयोजित होने वाले इस नृत्य में महिलाएँ सिर पर छिद्रित मटके मे जलता हुआ दीपक रखकर नृत्य करती है।
- तभी से जोधपुर में प्रतिवर्ष गणगौर के समय चैत्र कृष्ण अष्टमी को घुड़ला नृत्य किया जाता है।
- **घुड़ला नृत्य को 'रूपायन संस्थान' बोरूंदा (जोधपुर ग्रामीण) के अध्यक्ष स्व. कोमल कोठारी ने संरक्षण देकर राष्ट्रीय मंच प्रदान किया था।**

बीकानेर का अग्नि नृत्य -

- बीकानेर के कतरियासर ग्राम में **जसनाथी सिद्धों** द्वारा रात्रि जागरण के समय धधकते अंगारों के ढेर (धूणा) पर **फतै-फतै** के उद्घोष के साथ किया जाने वाला नृत्य है।
- इसे संरक्षण देने का कार्य बीकानेर महाराजा श्री गंगासिंह राठौड़ द्वारा किया गया।
- अग्नि नृत्य - आश्विन शुक्ल सप्तमी

इसे 'आग फाग राग' वाला नृत्य भी कहते है।

Scanned with ACE Scanner

रम्मत में मुख्य **कलाकार 'खेलार'** या **'टेरिये'** होते हैं। बीकानेर में रम्मतों का प्रारंभ – 'फक्कड़दाता री रम्मत' से होता है।

रम्मत की प्रमुख विशेषताएँ –

- **प्रयुक्त मुख्य वाद्य** – नगाड़ा व ढोलक, तबला, झांझ, चिमटा, हारमोनियम आदि।
- **रम्मत से पूर्व गणेश वन्दना, बारहमासा, रामदेव भजन, पणिहारी, लावणी, देवी लटियाली स्तुति, चौमासा आदि गीत गाये जाते है।**
- **प्रमुख रम्मत** – स्वतंत्र बावनी (तेज कवि), हेड़ाऊ मेरी की रम्मत (जवाहर लाल पुरोहित) मनीराम जी रम्मत (कन्हैयालाल पुरोहित), फागुजी री रम्मत, जमनादास री रम्मत, अमरसिंह री रम्मत, कन्हैयालाल जी री रम्मत, राजिया महाराज री रम्मत आदि प्रसिद्ध रम्मतें है।
- **हेड़ाऊ मेरी री रम्मत सर्वाधिक लोकप्रिय रम्मत है।**
- बीकानेर में **आचार्यों का चौक रम्मतों के लिए प्रसिद्ध** है। जहाँ रम्मत के शुरू होने से **पूर्व रामदेवजी के भजन** गाये जाते हैं।
- **तेज कवि (जैसलमेर)** रंगमंच के क्रांतिकारी कार्यकर्ता थे जिन्होंने जैसलमेर में श्रीकृष्णा कंपनी के नाम से रम्मत का अखाड़ा शुरू किया।
- इन्होंने **1943 ई. में 'स्वतंत्र बावनी रम्मत'** की रचना कर महात्मा गाँधी को भेंट की जिसके कारण उनके खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किया गया।

तमाशा

- तमाशा कला मुख्यत: **महाराष्ट्र** से है परन्तु **राजस्थान में जयपुर** प्रसिद्ध है।
- यद्यपि तमाशे का प्रारंभ 1594 ई. राजा में मानसिंह प्रथम के समय मोहन सिंह द्वारा रचित **'धमाका मंजरी'** के साथ हो गया था।
- किन्तु इसका वास्तविक प्रारंभ जयपुर महाराजा सवाई प्रताप सिंह के शासन काल में **'बंशीधर भट्ट'** द्वारा किया गया। तमाशे में **'उस्ताद परम्परा' का प्रारंभ 'फूलजी भट्ट'** द्वारा किया गया।
- तमाशा कलाकारों को अपनी **गुणीजन खाने में संरक्षण** देने का कार्य सवाई **रामसिंह द्वितीय (1835-80)** ने किया।
- तमाशे में तबला, सारंगी, नक्कारा और हारमोनियम ही प्रमुख वाद्य है। **होली के दिन 'जोगी जोगन'** का तमाशा, होली के दूसरे दिन (धूलेण्डी) 'हीर रांझा', चैत्र अमावस्या को **'गोपीचन्द'** छैल पणिहारिण की प्रस्तुति व शीलाष्टमी के दिन **'जुट्ठन मिया'** का तमाशा खेला जाता है।
- जयपुर का भट्ट परिवार तमाशे की कला का संरक्षक है। मुख्य कलाकार - गोपीकृष्ण भट्ट (**गोपी जी** के नाम से प्रसिद्ध), वासुदेव भट्ट, सौरभ भट्ट, दिलीप भट्ट फूलजी व मन्नू जी भट्ट आदि है।
- तमाशा में **स्त्री पात्रों की भूमिका स्वयं स्त्रियां** निभाती है जयपुर की प्रसिद्ध नर्तकी गौहर जान स्वयं तमाशा में भाग लेती थी।
- **वासुदेव भट्ट** – इन्होंने **'गोपीचन्द'** एवं **'हीर रांझा'** नामक तमाशा प्रारंभ किया इसके अलावा घासीराम कोतवाल, उलझी आकृतियां आदि नाटक प्रमुख है।
- **बंशीधर भट्ट** – इन्होंने कानगुजरी, जोगी-जोगन, लैला मजनू, छैल-पणिहारिण, रसिली तम्बोलन आदि की रचना की।

नौटंकी

- नौटंकी का शब्दिक अर्थ है नाटक में अभिनय करना।
- **नौ वाद्य यंत्रों का प्रयोग होने के कारण इसे नौटंकी** कहते है। इसमें मुख्यत: चंग, ढ़ोलक, सारंगी, हारमोनियम, बांसुरी, ढ़ोल, नगाड़ा आदि प्रमुख है। नौटंकी का खेल प्राय: शादी, सामाजिक समारोह, मेले तथा लोकोत्सव के मौके पर खेला जाता है।
- **रामदयाल शर्मा, सामईखेड़ा (डीग)** – 2022 में पद्मश्री मिला प्रसिद्ध नौटंकी कलाकार जिसे **ब्रज कोकिला** और **ब्रज पपीहा** के नाम से जानते है।
- मास्टर गिरीराज प्रसाद (कामां, डीग) – **नौटंकी का जादूगर**
- **मुसरत बाई, करौली** – पहली महिला नौटंकी कलाकार
- **अन्य कलाकार – गुलाल बाई, कमलेश लता,** प्रेमलता, छज्जन सिंह, **कृष्णा कुमारी,** श्यामसुन्दर, लच्छी, गिरधारी, कल्याण सिंह, बद्रीसिंह, स्वर्णलाल, बाबूलाल हकीम, मनोहर लाल, कुंजी शिवदत्त आदि।

लीलाएँ

1. **रासलीला** – रासलीला श्रीकृष्ण के जीवन-चरित्र पर आधारित लोक नाट्य है। रासलीला का प्रवर्तक वल्लभाचार्य को माना जाता है। रासलीला को विशेष स्वरूप शिवलाल कुमावत फुलेरा (जयपुर ग्रामीण) ने प्रदान किया।

- रासलीला का प्रचलन ब्रज क्षेत्र भरतपुर व मारवाड़ में अधिक है। ब्रज की राई जाति व्यवसायिक रूप से रासलीला करती है।
- भरतपुर क्षेत्र में हरगोविंद स्वामी और रामसुख स्वामी के रासलीला मंडल अधिक प्रसिद्ध हैं। ये दोनों दल ब्रज भाषा में ही रासलीलाओं का प्रदर्शन करते हैं। राज्य में 'फुलेरा' (जयपुर ग्रामीण) रासलीला का प्रमुख केंद्र है।

3. **रामलीला** – यह भगवान राम के जीवन-चरित्र पर आधारित होती है। इनका प्रारम्भ गोस्वामी तुलसीदास द्वारा काशी में किया गया। राजस्थान में अग्रांकित स्थानों की रामलीलाएं प्रसिद्ध हैं – बिसाऊ (झुंझुनूं) पांटूदा (कोटा), जुरहरा (भरतपुर), अटरू (बारां)।

- **बिसाऊ** की रामलीला मूकाभिनय के लिए प्रसिद्ध है तथा **अटरू की रामलीला में धनुष किसी दर्शक द्वारा** तोड़ा जाता है।
- **मांगरोल (बारां) की 2½ कड़ी के दोहों की रामलीला** प्रसिद्ध है।
- खण्डार (सवाई माधोपुर) की रामलीला भी प्रसिद्ध है।

Scanned with ACE Scanner

22 राजस्थान की हस्तकलाएं

- राजस्थान को '**हस्तशिल्प कलाओं का खजाना/हस्तकलाओं का अजायबघर**' कहा जाता है।
- राजस्थान में **हस्तकला का सबसे बड़ा केन्द्र 'बोरनाड़ा' (जोधपुर)** है, तो वहीं राजस्थान में **हस्तकलाओं का तीर्थ जयपुर** कहलाता है।

कोटा डोरिया की मंसूरिया साड़ी (कैथून), कोटा -

- 1716 ई. में कोटा राज्य के प्रधानमंत्री झाला **जालिमसिंह ने मैसूर से** कुछ बुनकरों को बुलाया तथा उनमें से सबसे कुशल बुनकर **महमूद मंसूरिया** था। उसने सर्वप्रथम यहाँ हथकरघा उद्योग की स्थापना कर साड़ी बुनना शुरू किया। उसी के नाम से साड़ी का नाम मंसूरिया साड़ी हो गया।

जेनब की साड़ियां -

- **कोटसुँआ गाँव (दीगोद-कोटा)** की श्रीमती जेनब ने सूती साड़ियों का निर्माण किया जिन्हें **'जेनब की साड़ियाँ'** कहते हैं।

जसोल की जट पट्टी -

- जसोल गांव (बालोतरा) अपने 'जट पट्टी' उद्योग के लिए प्रसिद्ध है। जट पट्टी बकरी के बालों से बनती हैं। जिरोही, भाखला, गदहा, सतरंजी आदि उत्पाद।

> **नोट : जटकतराई कला बीकानेर की प्रसिद्ध है। जिसमें ऊँट की ऊंन की कटिंग करके आकर्षण चित्र** बनाते है।

दरी उद्योग -

- केन्द्र - (1) सालावास, जोधपुर ग्रामीण (2) लवाण - दौसा (3) टांकला - नागौर (4) धरियावाद - प्रतापगढ़ (5) उमरगांव - बूंदी
- प्रमुख कलाकार - श्याम आहूजा (जोधपुर), केवलराज प्रजापत (बाड़मेर), गंगासिंह, रामेश्वर लाल, शंभूसिंह गहलोत
- जोधपुर जिले का सालावास ग्राम अपने दरी उद्योग के लिए विख्यात है।

नमदे-गलीचे -

A. नमदा -

- नमदा को ऊनी गलीचा या चटाई भी कहा जाता है।
- प्रसिद्ध - **टोंक** - इसे ''नमदों का शहर'' या ''नमदा नगरी'' कहा जाता है।

B. गलीचा -

- डिजाइन युक्त सूती मोटी-मोटी दरिया होती है।
- केन्द्र - (1) जयपुर (2) बीकानेर की सेन्ट्रल जेल में निर्मित गलीचे
- यह कला ईरान से भारत आई।
- गलीचे बनाने का कार्य मानसिंह के समय प्रारम्भ हुआ था।

अन्य तथ्य -

1. इसी प्रकार बाड़मेर के ऊनी कम्बल, दरियां, ऊँट के तंग एवं गडरारोड़ के **ऊनी कम्बल,** कालख (जोबनेर) की जाजमें (जोबनेर), दौसा के खेमे और डेरे, **बारां का मांगरोल टेरीकॉट खादी** की बुनाई के लिए प्रसिद्ध हैं।
2. इसी प्रकार **जालौर के लेटा गाँव व गुढ़ा बालोतान गाँव** अपने **'खेसले' (ओढ़ने की मोटी सूती चद्दर)** की बुनाई के लिए प्रसिद्ध हैं।
3. साथ ही यहाँ की **दरी-पट्टियां, तौलिएं एवं 'जनता धोती'** भी बड़ी प्रसिद्ध हैं।
4. मारवाड़ में ऊँट के बच्चे को 'तोड़यों' (टोल्डीया) कहा जाता है जिसके **मुलायम बालों** को सूत के साथ धागा मिलाकर बहुत बढ़िया कपड़ा तैयार किया जाता है, उसे **'बाखल/भाखला'** कहते हैं। इसकी विशेषता यह है कि **वर्षा की नमी में भी यह सूखा** रहता है।
5. इसी प्रकार जालौर के खेसले, बीकानेर व टोंक के नमदे, जयपुर के गलीचे, जैसलमेर के पट्टू, मांगरोल बारां की मंसूरिया साड़िया, जैसलमेर की जरीदार साड़ी, छीपों का आकोला, चित्तौड़गढ़ के बिछा के जाजम, नाथद्वारा की छपी हुई फूलकारी साड़ियां, जोधपुर व मलमल दूर-दूर तक प्रसिद्ध हैं। किसी जमाने में जालौर तथा मार की टुकड़ी मारवाड़ के कपड़ों में सर्वोत्तम समझी जाती थी।
6. **जटपट्टी उद्योग :** बकरी के बाल, ऊंट, भेड़ की ऊन से ऊनी दरि का निर्माण करना। जैसे - जिरोही, **भाखला, गदहा, सतरंजी** आदि
   केन्द्र - जस्सौल (बालोतरा), बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर आदि।

बन्धेज (टाई एण्ड डाई कला/बांधो व रंगो कला) -

- मलमल, वायल, जारजेट अथवा अन्य किसी महीन वस्त्र पर डोरे विभिन्न प्रकार के चित्र अथवा आकृतियों की चुन्नटें बाँधकर इच्छि रंगों में रँगने की क्रिया बन्धेज कहलाती है।
- प्रसिद्ध बंधेज जयपुर की जबकि बंधेज की मण्डी जोधपुर में हैं।
- दानेदार बंधाई मोठड़ा के नाम से जानी जाती है।

Scanned with ACE Scanner

कृषि के औजार	नागौर
सूंघनी नसावर/नसवार	ब्यावर
ठप्पा/ब्लॉक प्रिंटिंग	बगरू (जयपुर ग्रामीण)
दाबू	छीपों का आकोला (चित्तौड़)
ऊनी कंबल व कालीन	जैसलमेर, बीकानेर, गड़रारोड़
कागज/पाने बनाने की कला	सांगानेर (जयपुर ग्रामीण), नाथद्वारा
चमड़े के बटवे, जस्ते की मूर्ति	जोधपुर
हाथी दाँत की चूड़ियाँ	जोधपुर
ओढ़नी/लहरिया/चुनरिया	जयपुर, जोधपुर
लाख/काँच का सामान	जयपुर, जोधपुर
मोजड़ियाँ	जोधपुर, भीनमाल (जालौर)
तलवार	सिरोही
खेलकूद का सामान	हनुमानगढ़
खस इत्र	सवाई माधोपुर, भरतपुर, मेड़ता
तुड़ीया, पायल, पायजेब	धौलपुर (राजाखेड़ा)
कठपुतली	उदयपुर
गणगौर	बस्सी (चित्तौड़गढ़)
जाजम प्रिंट, आजम प्रिंट, दाबू	छिपों का आकोला (चित्तौड़गढ़)
ब्लैक पॉटरी	कोटा, सवाईमाधोपुरा
कशीदाकारी जूतियाँ	भीनमाल (जालौर)
चंदन की मूर्तियाँ	चूरू
पेंचवर्क	शेखावाटी
पाव रजाई	जयपुर
पिछवाईयां	नाथद्वारा
पनढारी के मोदक	बीकानेर
ऊनी बरड़ी, पटटू, लेई	जैसलमेर, बाड़मेर
गलीचे	जयपुर, बीकानेर
नमदे	टोंक (प्रसिद्ध कलाकार - नंदकुमार तिवारी)

सुनहरी टेराकोटा	बीकानेर
रामदेवजी के घोड़े	पोकरण (जैसलमेर)
आम पापड़	बाँसवाड़ा
लकड़ी का नक्काशीदार फर्नीचर	बाड़मेर
शीशम का फर्नीचर	श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़
सॉफ्ट टॉयज	श्रीगंगानगर, गलियाकोट
वुडन पेन्टेड फर्नीचर	किसनगढ़ (अजमेर)
लाख की पॉटरी	बीकानेर
गरासियों की फाग (ओढ़नी)	सोजत (पाली)
लकड़ी के झूले, चूनड़ी	जोधपुर
एल्यूमिनियम के खिलौने	जोधपुर
व्हाइट मैटल के पशु-पक्षी के चित्र	उदयपुर
कल्चर्ड मोती (मानव निर्मित)	बाँसवाड़ा
पेपरमेशी (लुग्दी) का काम	जयपुर, उदयपुर
छपाई के घाघरे	आकोला (चित्तौड़गढ़)
मिट्टी के खिलौने	बू (नागौर)/बू-नरावता गांव
डूगरशाही ओढ़नी	श्रीडूंगरगढ़, बीकानेर
सोप स्टोन के खिलौने (रमकड़ा उद्योग)	गलियाकोट, डूंगरपुर

विशेष :-

1. मोती भारत कढ़ाई कला – जालौर
2. भरत, सूफ, हूरम जी आदि शब्द – कढ़ाई एवं पचवर्क से संबंधित
3. रूपाहली और सुनहरी (स्वर्णिम) छपाई – किसनगढ़, चित्तौड़गढ़, कोटा
4. लकड़ी के बने घोड़े (खिलौने) - उदयपुर
5. उस्ताकला, मथैरण कला, जटकतराई कला का केन्द्र – बीकानेर
6. संगमरमर की मूर्तियों का केन्द्र - जयपुर (प्रसिद्ध कलाकार – अर्जुन प्रजापति)

❖❖❖❖❖

Scanned with ACE Scanner

डिंगल	पिंगल
पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी) का साहित्यिक रूप डिंगल कहलाया।	ब्रजभाषा एवं पूर्वी राजस्थानी का साहित्यिक रूप पिंगल
डिंगल का अधिकांश साहित्य चारण कवियों द्वारा लिखित है।	अधिकांश साहित्य भाट जाति के कवियों द्वारा लिखित है।
इसका विकास गुर्जरी अपभ्रंश से हुआ है।	इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है।
प्रमुख ग्रंथ-राजरूपक, वचनिका राठौड़ रतनसिंह महेसदासौतरी, अचलदास खींची री वचनिका, राव जैतसी रौ छंद, नागदमण, रूक्मणि हरण, ढोला मारू रा दूहा, संगत रासो आदि।	प्रमुख ग्रंथ - पृथ्वीराज रासो, रतन रासो, विजयपाल रासो, खुमाण रासो, वंश भास्कर आदि।

डॉ. एल.पी. टैसीटोरी का वर्गीकरण

- डॉ. एल.पी. टैसीटोरी के अनुसार राजस्थान और मालवा की बोलियों को दो भागों में बांटा जा सकता है -
  - (1) पश्चिमी राजस्थानी या मारवाड़ी तथा
  - (2) पूर्वी राजस्थानी या ढूंढाड़ी।

1. पश्चिमी राजस्थानी की मुख्य बोलियां -

- पश्चिमी राजस्थानी की मुख्य बोलियां चार हैं - **मारवाड़ी, मेवाड़ी, वागड़ी, शेखावाटी।**

मारवाड़ी -

- कुवलयमाला में उल्लेखित 'मरुभाषा' यही मारवाड़ी है जो पश्चिमी राजस्थान की मुख्य बोली है। **मारवाड़ी का आरम्भ काल आठवीं सदी से माना जा सकता है।**
- प्रसार एवं साहित्य दोनों ही दृष्टियों से मारवाड़ी राजस्थान की सर्वाधिक समृद्ध एवं महत्त्वपूर्ण भाषा है।
- यह बोली पश्चिमी राजस्थान के जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, बीकानेर, पाली, जैसलमेर, नागौर, जालौर एवं सिरोही, बाड़मेर, बालोतरा, सांचौर, फलौदी जिलों में बोली जाती है। **विशुद्ध मारवाड़ी केवल जोधपुर एवं आसपास के क्षेत्र में ही बोली जाती है।**
- **मारवाड़ी का साहित्यिक रूप डिंगल कहलाता है।** इसकी उत्पत्ति गुर्जरी अपभ्रंश से हुई है। **सोरठा, छंद** और **मांडराग** मारवाड़ी बोली की शिल्पगत विशेषताएँ हैं। **राजिया के सोरठे पूर्वी मारवाड़ी में लिखे गए हैं, तो वेलि क्रिसन-रूकमणी री वचनिका उत्तरी मारवाड़ी में लिखी गई है। जैन साहित्य व मीरां के अधिकांश पद** इसी भाषा में लिखे गए हैं।
- **मारवाड़ी की बोलियाँ एवं उपबोलियां :** मेवाड़ी, वागड़ी, शेखावाटी, बीकानेरी, ढटकी, थली, खैराड़ी, सिरोही, नागौरी, देवड़ावाड़ी, गौड़वाड़ी आदि मारवाड़ी भाषा की प्रमुख उपबोलियां हैं।

मेवाड़ी -

- उदयपुर एवं उसके आसपास का क्षेत्र मेवाड़, राजसमन्द, चित्तौड़गढ़, शाहपुरा, भीलवाड़ा, सलूम्बर तथा यहाँ की बोली मेवाड़ी कहलाती है।
- **यह मारवाड़ी के बाद राजस्थान की महत्त्वपूर्ण बोली है।** मेवाड़ी बोली के विकसित रूप के दर्शन हमें 12वीं-13वीं शताब्दी में ही दिखाई देने लगते हैं। **जगत अंबिका** मंदिर में उत्कीर्ण शिलालेखों में सर्वप्रथम इस बोली के साक्ष्य मिलते है। मेवाड़ी भाषा में 'नी' का प्रयोग सर्वाधिक होता है।
- **धावड़ी उदयपुर की एक बोली है।**
- महाराणा कुंभा के नाटक एवं कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति में भी मेवाड़ी बोली देखने को मिलती हैं।
- बावजी चतुरसिंह जी ने मेवाड़ी में वेगसूत्र, भगवद्गीता और सांख्यकारिका जैसे ग्रंथों की रचना की था।

वागड़ी -

- डूंगरपुर एवं बाँसवाड़ा के सम्मिलित क्षेत्रों का प्राचीन नाम वागड़ था इसलिए वहाँ की बोली वागड़ी कहलायी, जिस पर गुजराती एवं मालवी का प्रभाव अधिक है।
- **डॉ. ग्रियर्सन इसे 'भीली' भी कहते हैं।** भीली बोली वागड़ी की सहायक बोली है। वागड़ी बोली मारवाड़ी व मालवी बोली का मिश्रण जो दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान में बोली जाती है।
- संत मावजी द्वारा लिखित ग्रंथ "**मावजी के चौपड़े**" में भी वागड़ी बोली का प्रभाव रहा।

शेखावाटी -

- मारवाड़ी की उपबोली शेखावाटी राज्य के शेखावाटी क्षेत्र (सीकर, झुंझुनूं, नीमकाथाना तथा चूरू जिले के कुछ क्षेत्र) में बोली जाती है (विशेष चिड़ावा एवं मण्डावा क्षेत्र में) जिस पर मारवाड़ी एवं ढूंढाड़ी का प्रभाव दिखाई देता है।

गौड़वाड़ी -

- सांचौर जिले की आहोर तहसील के पूर्वी भाग से प्रारम्भ होकर बाली (पाली) में बोली जाने वाली यह मारवाड़ी की उपबोली है। **बीसलदेव रासो (लेखक नरपति नाल्ह) इस बोली की प्रमुख रचना है।** गौड़वाड़ी बोली मारवाड़ी बोली की उपबोली है। इसकी उपबोलियाँ **सिरोही, बालवी, खणी व महाहड़ी** है।

Scanned with ACE Scanner